स्कूल शिक्षा विभाग (छ.ग.) में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्थायित्व एवं निरंतरता हेतु योजना

विवरणिका (Prospectuś)

चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने के उपरांत जीता हुआ हर नर–नारी में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीने की प्रवृति होती है जिसके हेतु भयमुक्त व अपराधमुक्त होना समीचीन (पास में) है –

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना–

(i) एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना जो संचालक, एस.सी.ई.आर.टी को रिपोर्ट करे तथा जिसका संचालन चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व्यक्तियों व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युद्य संस्थान) अछोटी जिला–दुर्ग के सदस्य के मार्गदर्शन में हो।

(ii) चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित 14 वांगमय का विधिवत अध्ययन प्रस्तावित किया गया है जिसकी व्यवस्था मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युद्य संस्थान) द्वारा एक वर्षीय पाठ्यक्रम के रुप में निर्धारित की गई है। जिसमें प्रति वर्ष साठ प्रतिभागियों को लिया जाएगा। पारंगत होने के लिए न्यूनतम एक वर्षीय पाठ्यक्रम जिसमें सम्पूर्ण विषयवस्तु का परिचय हो सके आवश्यक है।

जो अधिकारी/शिक्षक लगातार एक वर्षीय आवासीय अध्ययन के लिए अपना समय नहीं निकाल पाते हैं उनके लिए प्रत्येक माह में सात दिवसीय अध्ययन शिविर आयोजित किया जाएगा ।

उपरोक्त दोनों विधि से पारंगत होने की घोषणा अध्ययन करने वाला स्वयं करेगा। जब तक वह अपनी घोषणा से भिन्न आचरण नहीं करता तब तक उसे सही माना जाए।

(iii) स्कूल शिक्षा विभाग, छ.ग. शासन द्वारा मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युद्य संस्थान) को चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु राज्य स्रोत केन्द्र के रुप में पहचाना जाए। मानवीय शिक्षा शोध संस्थान के अंतर्गत चेतना विकास मूल्य शिक्षा अनुसंधान केन्द्र का संचालन होगा जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रचलित शिक्षा के विकल्प को प्रस्तुत करना होगा।

विगत से वर्तमान तक समय–समय पर धरती के सभी भागों में अनेक महापुरुषों एवं शिक्षाविद्ों ने वर्तमान शिक्षा के अधुरेपन एवं खामियों को स्पष्ट

इंगित किया है लेकिन विकल्प के अभाव में छोटे–छोटे परिवर्तन को छोड़कर

शिक्षा की विषयवस्तु एवं मूल्यांकन पद्धति में अधिक परिवर्तन नहीं हो सका है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में मानवीय शिक्षा का स्वरुप स्पष्ट होता है जिसमें मानव चेतना, देव चेतना ,दिव्य चेतना का अध्ययन कराया जाता है। जो अभी तक शिक्षा के संदर्भ में व्यक्त सभी कामनाओं, अपेक्षाओं को पूरा करने मे सक्षम है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा शोध केन्द्र, एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर के सदस्य मध्यस्थ दर्शन का गहन अध्ययन कर इस बात को जाचेंगे। साथ ही प्रचलित शिक्षा के विकल्प के रुप में कक्षा 1 से 12 वीं तक पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का काम मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युद्य संस्थान) के सदस्यों के साथ मिलकर करेंगे।

(iv) एस.सी.ई.आर.टी. में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ में दस पारंगत व्यक्ति रहेंगे जो पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास संबंधित गतिविधियों का संचालन व अन्य राज्यों मे मार्गदर्शन एवं समन्वय करेंगे । इस प्रकोष्ठ का प्रमुख कार्य राज्य स्रोत केन्द्र के साथ मिलकर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के सिद्धांत एवं शिक्षा के अन्य सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए इस शिक्षा का प्रसार संपूर्ण मानवता तक पहुंचाना होगा।

(v) चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ में प्रारंभिक दो वर्ष अभ्युद्य संस्थान का एक सदस्य इसका प्रमुख रहेगा, तत्पश्चात् शिक्षा विभाग से संयुक्त संचालक स्तर का एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व्यक्ति इसका संचालन करेगा।

अभ्युद्य संस्थान के सभी सदस्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्यापन उपकार विधि (बिना किसी आर्थिक अपेक्षा) से कराते रहे हैं व भविष्य में भी कराते रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

(vii) इन क्रियाकलापों हेतु आवश्यक बजट का प्रावधान यूरोपियन कमीशन/ राज्य शासन/सर्व शिक्षा अभियान/राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान/भारत सरकार मद से किया जाएगा ताकि निर्बाध गति से चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जा सके।

2. राज्य शासन द्वारा स्कूल शिक्षा के कक्षा 1 से 12वीं तक के सभी बच्चों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा से अध्ययन कराने का निर्णय लिया गया है।

छत्तीसगढ़ शासन के स्कूल शिक्षा मंत्री आदरणीय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने 8 मार्च 2010 को विधानसभा में घोषणा की कि सभी स्कूलों में पहला पीरियड मूल्य शिक्षा, योगाभ्यास, महापुरुषों की जीवनी इत्यादि के साथ जीवन विद्या (चेतना विकास मूल्य शिक्षा) की शिक्षा देने वाला होगा।

उपरोक्त अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु–

(i) राज्य के सभी 2 लाख शिक्षकों को एडूसेट के माध्यम से चेतना विकास मूल्य शिक्षा से परिचित कराने की आवश्यकता है। अभी तक दो बार एक दिवसीय प्रशिक्षण, एक बार 7 दिवसीय प्रशिक्षण, 3 बार पांच दिवसीय प्रशिक्षण, एक बार 10 दिवसीय चेतना विकास मूल्य शिविर का संचालन एडूसेट के माध्यम से किया गया है। एडूसेट से 7 दिवसीय शिविरों का आयोजन उचित होगा।

इस प्रकार अभी तक लगभग 14000 शिक्षक, अधिकारियों, व्याख्याताओं एवं प्राचार्यों से एडूसेट के माध्यम से बातें हई हैं। इसके उत्साहजनक परिणाम सामने आये हैं। अब अधिकांश लोग स्वेच्छा से आगे इसे और अधिक समझना चाहते हैं व अपने पूरे परिवार जनों व संबंधियों के साथ इसमें आना चाहते हैं।

(ii) अतः बच्चों के अभिभावक, अन्य ग्रामीण व शहरी समाज में सभी में मानव चेतना विकास हेतु एडूसेट पर हर माह एक निश्चित तिथि में 7 दिवसीय शिविर का प्रसारण किया जाएगा ताकि राज्य में वातावरण निर्माण व उसकी निरंतरता बनी रहे। एडूसेट केन्द्रों की संख्या में विस्तार के बाद प्रतिभागियों को टीए/डीए देने की आवश्यकता नहीं होगी। अतः इस प्रकार के शिविरों का आयोजन बिना किसी धन व्यय के किया जा सकेगा।

(iii) एडूसेट से शिविर करने के बाद जो लोग स्वेच्छा से कक्षागत शिविर करना चाहते हैं उनके लिए अभ्युद्य संस्थान या डाइट में शिविर की व्यवस्था की जाएगी।

(iv) शिक्षा विभाग के अलावा अन्य विभागों के लोग जो शिविर करना चाहते हैं उन्हें छ. ग. शासन द्वारा अवकाश की सुविधा जैसे महाराष्ट्र में विपश्यना ध्यान के लिए दस दिन का अवकाश दिया जाता है, दी जाएगी।

3. स्कूल शिक्षा विभाग के निर्णयानुसार राज्य में डी.एड. की न्यूनतम 25 प्रतिशत सीटें चेतना विकास मूल्य शिक्षा में चलाई जाएंगी। इस हेतु–

(i) सभी डाइट में चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत 2 व्यक्ति की नियुक्ति की जाएगी।

(ii) प्रत्येक विद्यालय में चेतना विकास मूल्य शिक्षा से हर विद्यार्थी में स्वयं के प्रति विश्वास एवं श्रेष्ठता के प्रति सम्मान से जीने की राह प्रशस्त होगी तथा प्रत्येक गांव में जीवन विद्या शिविरों एवं अध्ययन से **परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था** साकार होने की परिकल्पना को ठोस आधार मिलेगा।

इस हेतु सभी जिलों में **डाइट** एवं ब्लाक स्तर पर **बाइट** में भी चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ स्थापित किए जाएंगे।

4. एस.सी.ई.आर.टी., डाइट, बाइट व सभी विद्यालयों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्यापन कराने के लिए पारंगत शिक्षक उपलब्ध हों इस हेतु जीवन विद्या परिचय शिविर से गुजरने के बाद स्वेच्छा से पारंगत होने की इच्छा रखने वाले शिक्षक, अन्य विभागों के अधिकारी व समाज के लोगों के लिए अभ्युद्य संस्थान, डाइट एवं विभिन्न संकुलों पर 1 वर्षीय चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन पाठ्यक्रम के संचालन की व्यवस्था की जाएगी।

5. एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में प्रतिमाह 2 जीवन विद्या शिविर का संचालन चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रबोधकों द्वारा किया जाएगा। एस.सी.ई.आर.टी. में स्थान अभाव होने पर **'सत्यम जीवन विद्या केन्द्र'** व्ही.आई.पी. रोड पर भी शिविर आयोजित किये जाएंगे।

6. शिविर के बाद एवं इसके अध्ययन क्रम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित वागंमय एवं जीवन विद्या शिविर का डीवीडी की कॉपी एस.सी.ई.आर.टी. को उपलब्ध करा दिया गया है। इसकी कॉपी बनाकर सभी विद्यालयों एवं अधिकारियों तक भेजी जाएंगी ।

7. वर्ष में न्यूनतम एक बार सभी जिला एवं राज्य स्तरीय अधिकारियों के साथ शिविर व अध्ययन की व्यवस्था की जाएगी ताकि वे अपने स्वयं में गुणात्मक परिवर्तन के साथ ही सहयोगी कर्मचारियों का मार्गदर्शन व उत्साह बनाये रख सकेंगे।

8. **चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर आधारित विद्यालय**–शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. एवं अभ्युद्य संस्थान मिलकर ऐसे विकल्प के आधार पर विद्यालय का संचालन करेगें। यह एक प्रायोगिक विद्यालय रहेगा। इसमें भौतिक पक्ष सरकार द्वारा नियोजित रहेगा। संचालन की जिम्मेदारी चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ एस.सी.ई.आर.टी. व अभ्युद्य संस्थान की होगी।

शिक्षकों के स्वावलम्बन पूर्वक जीने की व्यवस्था जैसे कुछ कुटीर उद्योग, ग्राम शिल्प, खेती,गौशाला, कार्यशाला आदि विद्यालय की होगी ताकि शिक्षक सरकार से वेतन न लेते हुए स्वयं स्वावलंबी रहते हुए शिक्षा देगें।

शिक्षक स्वावलम्बन पूर्वक जीकर अध्ययन करायेंगे तो विद्यार्थी नौकरी मांगने वाले नहीं बल्कि स्वयं समाधान– समृद्धि पूर्वक जीते हुए दूसरों के लिए भी समाधान– समृद्धि पूर्वक जीने का अवसर प्रदान करने वाले होंगे।

9 कक्षा 1 से 10 वीं तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु प्रस्तावित दस पुस्तकें जीवन विद्या शिविरों के बाद वाचन सामग्री (त्मंकपदह उंजमतपंसें) के रूप में सभी प्रतिभागियों को दी जाएगी।

10 चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत शिक्षक अपने–अपने क्षेत्र में अपने–अपने विद्यालय को अभिभावक विद्यालय के रूप में विकसित करना चाहें तो उन्हें आवश्यकीय शिक्षण प्रशिक्षण हेतु स्वीकृति चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा प्रदान की जाएगी।

11 आचरण ही प्रमाण है। समाधान–समृद्धि ही आचरण का आधार है। अतः समाज में समाधान–समृद्धि पूर्वक जीकर प्रमाणित करने के इच्छुक युवाओं को चिन्हित कर उन्हें एक वर्षीय अध्ययन हेतु चयनित करने का कार्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ करेगा। प्रति वर्ष 10 से 20 युवाओं का चयन किया जाएगा। ऐसे युवा प्रतिफल अपेक्षा विहीन रहकर स्वावलंबी विधि से शिक्षा कार्यक्रम में भागीदारी करेंगे।

12 चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत (न्यूनतम एक वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययन संपन्न) व्यक्ति हर माह एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में दो दिवसीय कार्यक्रम/अध्ययन गोष्ठी संपन्न करते रहेंगे। इनके सुझावों व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युद्य संस्थान) अछोटी के मार्गदर्शन के आधार पर भावी रूपरेखा निश्चित होती रहेगी।